जैन एकता तथा विश्व शान्ति

मंगल स्मरण

– आचार्य कनकनन्दी

(मंगल -कीर्तन)

सत्य धर्म मंगलम्, आत्म धर्म मंगलम्।
जीव धर्म मंगलम्, विश्व धर्म मंगलम्।।
वस्तु तत्त्व मंगलम्, मोक्षमार्ग मंगलम्।
रत्नत्रय मंगलम्, सत्य श्रद्धा मंगलम्।।
सम्यग्ज्ञान मंगलम्, सदाचार मंगलम्।
सुध्यान मंगलम्, दशधर्म मंगलम्।।
कर्मक्षय मंगलम्, मोक्षतत्त्व मंगलम्।
अरिहंत मंगलम्, सिद्धप्रभु मंगलम्।।
सूरीवर मंगलम्, उपाध्याय मंगलम्।
सर्वसाधु मंगलम्, जिनवाणी मंगलम्।।
आत्मशान्ति मंगलम्, विश्वशान्ति मंगलम्।
दयाधर्म मंगलम्, साम्यभाव मंगलम्।।
दानसेवा मंगलम्, शुचिधर्म मंगलम्।
मंगल ही मंगलम्, सदा सदा मंगलम्।।

Scanned by TapScanner

विश्व शान्ति हेतु प्रार्थना

आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज : हेऽऽऽ नीले गगन के तले, धरती का प्यार पले.....)
होऽऽऽ नीले गगन के तलेऽऽ सर्वत्र/(सर्वथा)शान्ति फैलेऽऽ
मानव हो या प्रकृति/(पशु) भी हो सदा ही शान्ति पाले ऽऽऽ....स्थायी....
मानव मिलकर राष्ट्र में रहकर वैश्विक भाव धरें ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
मानव पशु पक्षी कीट या पतंग सबसे प्यार पलेऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
कोई न अपना कोई न पराया वैश्विक कुटुम्ब पले ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
काहूँ न राग काहूँ न द्वेष सर्वत्र साम्य पले ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
जाति व पन्थ राष्ट्र के कारण काहूँ न बैर पले ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
अनीति अनादर पाप व अत्याचार कोई न ऐसा करे ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
हिंसा व भ्रष्टाचार शोषण दुराचार ऐसा न कोई करे ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
प्रजा हो राजा नेता हो नागरिक सब में मैत्री पले ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
प्राणी व प्रकृति सभ्यता संस्कृति सब में शान्ति झरे ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
शोषक शोषित मजदूर मालिक वैषम्य भाव टले ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
प्रकृति शोषण सञ्चय प्रदूषण कोई कभी न करें ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
ग्लोबल वार्मिंग भूकम्प अतिवृष्टि कहीं भी कभी न पले ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
सुनामी हीन वृष्टि ओजोन छेद भी विश्व से सभी टले ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
सदा हो सदाचार भाव में शुद्धाचार वचन हित ही बोले ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
शरीर मन में वचन आत्मा में सदा ही शान्ति झरे ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
पर्यावरण की सुरक्षा हेतु सब संकल्प करें ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
धर्म व विज्ञान परस्पर मिलकर विश्व कल्याण करें ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
मेरा लक्ष्य है सत्य साम्यमय सुखामृत झरें ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
'कनकनन्दी' का आह्वान विश्व को उदार भाव धरे ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन
वैश्विक समता शान्ति के हेतु है सभी प्रयास करें ऽऽऽ... हो ऽऽऽ नीले गगन

एकता से विकास एकता हीन से विनाश

(संगठन में शक्ति विघटन से क्षति)

आचार्य कनकनन्दी

(राग : आत्म शक्ति से..... चौपाई)
एकता सूत्रों के स्वरूप को जानो, उसकी महान् शक्ति पहचानो।
एकतामय है विकास (के) उपाय, विघटन है विनाश (के) आशय/(उपाय)
अनेकान्त में एकता समाहित, एकान्त में है एकता तिरोहित।
उदार सहिष्णु भाव में एकता, संकीर्ण कट्टर भाव (से) न एकता।।
परस्पर उपग्रहो एकता सिखाता, सहयोग द्वारा विकास होता।
वसुधैव कुटुम्ब है उदारभाव, स्वार्थपरता में अनुदार भाव।।
सद्भाव/(समन्वय) प्रेम से एकता बढ़ती, राग द्वेष से एकता घटती।
सत्य समता है एकता का प्राण, ईर्ष्या, घृणा से एकता का हनन।।
एकता हेतु है क्षमा अपनाओ, सहज-सरलभाव मन में लाओ।
विनम्र मधुर विराट बनो, भेद-भाव से ऊपर उठो।।
एकता में शक्ति है कलिकाल में, योग्यता शक्ति मन्द युग में।
तीर्थंकर गणधर रिक्त काल में, शलाका अवतारी शून्य काल में।।
रेशा से जब रस्सी बनती, शक्तिशाली को भी बान्ध डालती।
प्रबल वेग से जब पानी बहता, चट्टानों को भी चूर्ण करता।।
धागा की एकता से वस्त्र बनता, ईटों के द्वारा महल बनता।
जल बिन्दुओं से समुद्र बनता, भौतिक विश्व अणु से बनता।।
एकता हीन से दुर्दशा होती, देश/(भारत) की गुलामी से शिक्षा मिलती।
एकता हीन न समाज होता, केवल भीड़ न समाज होता।।
व्यक्ति समूह ही समाज होता, सद्भाव सहयोग/(एकता सद्भाव) सहिता होता।
एकता शक्ति से करो विकास, 'कनकनन्दी' का तुम्हें आशीष।।
मोक्षमार्ग है रत्नत्रयमय, पृथक्-पृथक् न मोक्षमार्ग।
विश्वास ज्ञान चारित्रमय है, सम्यक् समन्वयमय मार्ग।।

Scanned by TapScanner

"जैन धर्म की एकता के सूत्र"

(राग : विजयी विश्व तिरंगा प्यारा....., तुम दिल की धड़कन.....)

जैन धर्म की एकता को मानो, एकता योग्य सूत्र पहचानो। —आचार्य कनकनन्दी
एकता से प्राप्त लाभ को पाओ, विघटन हानी को कभी न पाओ।।ध्रु.
अनेकान्त व स्याद्वाद मानो, द्रव्य तत्त्व व पदार्थ जानो।
मोक्षमार्ग व मोक्ष पहचानो, तीर्थंकर व महामंत्र मानो।।
अनेकान्त है जैन सिद्धान्त, एकान्त दुराग्रह परे सिद्धान्त।
एकान्त दुराग्रह होता मिथ्यात्व, अनेकान्त बिना नहीं सम्यक्त्व।।
भाव अहिंसा है अनेकान्तवाद, वाचनिक अहिंसा होता स्याद्वाद।
समस्त जैन पंथों में मान्य, अनेकान्त व स्याद्वाद मान्य।।
अनेकान्त बताता अनन्त धर्म /(गुण), भाव अहिंसा व समन्वय /(समता)कर्म।
विरोध में अविरोध सिखाता, वैश्विक उदार भाव बताता।।
वचन पद्धति होता स्याद्वाद, कथन अनेकान्त होता स्याद्वाद /(सप्त भेद)।
हित-मित-प्रिय समन्वय कथन, अर्पित अनर्पित /(सापेक्ष दृष्टि से)होता है कथन।।
षट् द्रव्य सप्ततत्त्व समान, नव पदार्थ भी होते समान।
समस्त जैन पंथ में मान्य, इसी दृष्टि से एकता मान्य।।
मोक्ष का मार्ग है रत्नत्रयमय, द्रव्यतत्त्व व पदार्थमय।
रत्नत्रय की है पूर्णता मोक्ष, जैन मतों में यह प्रमुख।।
तीर्थंकर भी होते चौबीस, सभी को मान्य होते विशेष।
णमोकार मंत्र भी सभी को मान्य, महिमा फल भी सभी को मान्य/महिमा फल का करें सम्मान।।
आचार विचार में थोड़ा विभिन्न, काल व कर्म बने कारण।
पंचमकाल व विचित्र कर्म, जिससे बने पंथ विभिन्न।।
तथापि विद्वेष नहीं करणीय, समता एकता सदा पालनीय।
राग-द्वेष-मोह सर्व त्यजनीय, मैत्री प्रमोद सम /(शम)भजनीय।।
अन्यथा विद्वेष विद्रोह बढ़ते, पाप ताप व पतन होते।
उभयलोक दुःखमय होता, मोक्ष के विलोम संसार बढ़ता।।
मत /(पंथ)में भले रहे भिन्नता, मन से विद्वेष त्यागो सर्वथा।
एकता प्रेम से करो विकास, 'कनकनन्दी' का तुम्हें आशीष।।

सौजन्य : ब्र. सोहनलाल तस्य पुत्र केसूलाल, हीरालाल, निर्मल, शान्तिलाल मालवी, नि. झाड़ोल (सराडा)

Scanned by TapScanner